CHAPTER 36

MUSIC AND FINE ARTS

Doctoral Theses

305. भावना रानी

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के स्तर-निर्धारण एवं उसकी लोकप्रियता में सांगीतिक संस्थाओं का महत्व ।

निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

Th14837

सारांश

हिन्दुस्तानी संगीत की महान गायकी परम्परा, जिसे प्रायः घरानेदार गायकी अथवा घराने की संज्ञा देते हैं, और जो हमारे प्राचीन संगीत की अमूल्य धरोहर है, उसका निरन्तर लोप होता जा रहा है । संगीत की इस परम्पराको अक्षुण बनाये रखने कि लिए संगीत की इस प्राचीन क्रियात्मक विधि को प्राणधान बनाए रखने कि लिए आज पुनः नए सिरे से घरानों के आलोचनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा है । आज यह आवश्यक हो गया है, कि हम उन कारणों को खोजे ओर उन त्रुटियों का निवारण करें जिनके कारण घरानों का लोप हो रहा है । यह तभी अनिवार्य हो जाता है कि हम अपनी संस्थागत शिक्षण व्यवस्था में धरानों की महत्ती उपयोगिता को देखते हुए पाठ्यक्रमों में उसका समावेश करें । उसे घरानेदार गायकी के गुणों से अधिक सम्पन्न एवं समृद्ध बनायें तभी संगीत कला उन्नति के उच्च्व शिखर पर पहुँच सकेगी ।

विषय सूची

1. प्राचीनकाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल में संगीत का विकास 2. संगीत में गुरू-शिष्य परम्परा का उद्‌गम एवं विकास 3. संगीत शिक्षण पद्धति की संस्थाओं का उद्‌गम, विकास एवं संस्थाओं का महत्त्व 4. सांगीतिक संस्थाओं में संगीत संबंधी

उपादानों का विवेचन 5. साक्षात्कारों के आधार पर शिक्षकों के विचार 6. संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली की उपलब्ध्यिां न्यूतनाएँ एवं समाधान । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

306. ललिता

भारतीय मूर्तिकला के विभिन्न आयाम ।

निर्देशक : प्रो. विजय मोहन

Th14839

सारांश

विलासी जीवन पर धार्मिक आवरण डालकर उसे साधारण से असाधारण रूप प्रदान करना, प्राचीन समाज में यह भावना अपने प्रबल रूप में थी । शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन सभी भारतीय धर्मों में मूर्तियों का निर्माण किया गया । मूर्तियों से अलंकृत ये धार्मिक स्थल किसी न किसी काल में, किसी न किसी राज-शक्ति के द्वारा निर्मित किये गये । भारतीय मूर्तिकला धार्मिक रूप में हर युग में प्रचलित रही ं खजुराहों की सौंदर्यात्मक मूर्तिकला और होयसल की अत्यधिक अलंकरण से युक्त मूर्तिकला को जब मैने प्रत्यक्ष रूप में निकट से देखा तो मन में आश्चर्य हुआ कि इतनी सुन्दर अभिव्यक्ति, इतने कठोर माध्यम (पत्थर) में किस प्रकार से संभव हुई ? किसने बनाइ ? इन स्थलों की मूर्तिकला विभिन्न आयामों तथा विभिन्न माध्यमों में से गुजर कर आज जिस रूप में विद्यमान है, उसका वर्णन शोध में प्रस्तुत किया है ।

विषय सूची

1. कला की उत्पत्ति । 2. भरतीय मूर्तिकला के विभिन्न आयाम । 3. खजुराहो का धरातलीय मानचित्र । 4. तुलनात्मक अध्ययन । 5. उपसंहार । ग्रंथ सूची।

307. मिश्रा (सीमा उनियाल)

सचिन देव बर्मन तथा राहुल देव बर्मन के संगीत में सृजनात्मक सौंदर्यः एक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

Th14838

सारांश

इस शोध में सौन्दर्य, संगीत के सृजनातमक सौन्दर्य, सचिनदेव बर्मन के जीवन एवं संगीत, राहुलदेव बर्मन के जीवन एवं संगीत, सचिनदेव बर्मन एवं राहुलदेव बर्मन के गीतों में व्याप्त सृजनात्मक सौंदर्य की चर्चा है ।

विषय सूची

1. सौंदर्य 2. संगीत में सृजनात्मक सौंदर्य 3. सचिन देव बर्मन का संगीत और जीवन 4. राहुल देव बर्मन का संगीत और जीवन 5. सचिन देव बर्मन और राहुल देव बर्मन के कुछ गीतों में सृजनात्मक सौंदर्य । उपसंहार । सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

308. PUSHPA SATYASHEIL

Critical Study of the Origin and Development of the Violin Family with Special Reference to Violin in Hindustani Classical Music.

Supervisor : Prof. Anupam Mahajan
Th 14836

Abstract

Violin family belongs to the most important category of instruments '**chordophones**' played with bow and in the inverted style. It emerged almost at the same time around the earlier part of the 16th century, and lived side by side with the viols in rivalry till the latter were ousted by the first. The viol family was only superficially similar to the violin family, unrelated in construction, the latter being the brighter one, and having potential for fast and more accurate playing, suited more for the newer requirements of music. Violin though is the smallest member of its family but it is most popular, has emerged as an instrument which has multiple uses and created a space for itself, and has earned the honour of being a very respectable instrument becauses of its own qualities. Violin gradually not only made certain instruments like the **rebec** and the **lira da bracio** obsolete, but there but there was a tough competition between violin and viola, though both belong to the same family. Eighteenth century saw not only technical developments in this instrument, but a near revolution was brought about by the introduction of Tourte bow in the year 1785. By now violin had been established as the '**King of instruments**'.

Contents

1. Introduction. 2. Evolution of violin family. 3. Structure of violin family. 4. Evolution of viol family. 5. Leading manufacturers of violin. 6. Usage of violin. 7. Origin of violin with special reference to Hindustani classical music. 8. Presentation of violin in Hindustani classical music. Conclusion and Bibliography.

M.Phil Dissertations

309. अनीश कुमार
दोनों माध्यम से युक्त प्रातः कालीन रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. नज़्मा प्रवीण अहमद

310. बैनर्जी (नन्दिनी)
ध्रुपद की वर्तमान स्थिति एवं पुनरूत्थान के उपाय ।
निर्देशिका : प्रो. मंजुश्री त्यागी

311. बंसल (नीशू)
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सौन्दर्य पर तत्वों की भूमिका ।
निर्देशिका : प्रो. अजंली मित्तल

312. भाटिया (पूर्वा)
गज़ल गायान में शास्त्रीय पक्ष का विकास एवं ह्रास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. अजंली मित्तल

313. बिष्ट (पूर्ना)
कुमाऊँनी ऋतु संबन्धी गीत ।
निर्देशिका : प्रो. अजंली मित्तल

314. चैटर्जी (रेणू)
सांगीतिक प्रगती पर नवीन प्रवृत्तियों का प्रभाव ।
निर्देशिका : प्रो. मंजुश्री त्यागी

315. CHATTERJEE (Srabani)
Form in Hindustani Classical (Vocal Music)
Supervisor : Prof. Anjali Mittal

316. चतुर्वेदी (माधव प्रसाद)
प्रातः कालीन रागों में गांधार और निषाद स्वरका प्रयोगात्मक वैविधा ।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

317. डिम्पल
भारतीय संगीत में नाट्य की भूमिका (बीसवीं शताब्दी के संदर्भ में) ।
निर्देशिका : प्रो. नज़मा प्रवीण अहमद

318. गोपाल कृष्ण
वर्तमान समय में सितार वादन की गतों में विभिन्न की भूमिका ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

319. जोशी (गीता)
संगीत में व्यवसाय के विविध आयाम ।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

320. जोशी (मुक्ता)
ख्याल गायन में तान वैचित्र्य : विविध घरानों के संदर्भ में अवलोकन ।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

321. मलहोत्रा (दीपा)
कुमाऊँनी लोक-संगीत की धार्मिक परम्परा में वैदिक पुट ।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

322. PAWAR (Vinod)
Comparative Study of Violin with other Bow Instruments of Hindustani Classical Music.
Supervisor : Prof. Anupam Mahajan

323. रावत (हरीता)
गढ़वाली लोक संगीत की विभिन्न विधाओं में शास्त्रीय संगीत के तत्व ।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

324. RAY (Avisit)
Origion and Development of Tappa Style of Singing with Special Reference to its Influence on Rabindra Sangeet and Bengal.
Supervisor : Prof. Krishna Bisht

325. संजीव शंकर
शहनाई पर रागदारी संगीत की प्रस्तुति; उद्गम विकास एवं वर्त्तमान स्थिति ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीता कासलीवाल

326. शारदे (भवानी)
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में लोक संगीतात्मक तत्वों का समावेश ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पेन्टल

327. शर्मा (कोकली)
भारतीय संगीत के अनुसंधान में पाण्डुलिपियों का महत्त्व तथा भूमिका।
निर्देशिका : प्रो. गीता पेन्टल

328. शर्मा (श्वेता)
सितार और सुर बहार : इनकी एंतिहासिक पृष्ठभूमि और वादन शैली।
निर्देशक : प्रो. मदन शंकर मिश्रा

329. SUMATHI (K. K.)
Raga Kharaharapriya and Its Richness in Janya Ragas
Supervisor : Prof. Radha

330. उदय शंकर
पण्डित भोला नाथ भट्ट व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पेन्टल